समकालीन प्रमुख कहानियों में नारी की सहभागिता

डॉ. दिव्या सुथार, एम.ए.(हिन्दी), बी.एड., पी–एच.डी.(हिन्दी)

धर्मपत्नी संदीप कुमार जांगड़ा

359 गली न01 दीवान बस्ती

वार्ड न0 12 पेहोवा, कुरुक्षेत्र हरियाणा। 136128

नारी भगवान की ही अद्भुत कृति नहीं है, वरन् मानवों की भी अद्भुत सृष्टि है। मानव जाति की सभ्यता एवं सामाजिक विकास का मूल स्त्रोत नारी है। उसी के कारण संसार की सबसे अद्भुत संस्था गृह का जन्म हुआ, परिवार बने और समाज विकास का क्रम चला। समस्त विश्व की नारी मूल उद्भावनी शक्ति का प्रतीक है। सृश्टि के आदिकाल से 'कहा न तिरिया कर सके' और 'का न करै अबला प्रबल' के आधार पर नारी का महत्व अखण्ड रहा है। नारी के बिना पुरूश शक्तिविहीन है, नारी ही विश्व की शक्ति है और पुरूष का सम्पूर्ण व्यक्तित्व उसके गर्भ में विद्यमान है। आस्वाद्य, आस्वादन और आस्वादक, इन तीनों गुणों के कारण वह आकर्षण का केन्द्र भी है और आकर्षित भी होती है। नारी रूप में सुकुमारता, मादकता, मृदुता, वंशीकारिता, सुन्दरता, सरसता एवं आकर्षण नर से अधिक होता है, उसके यही गुण सृष्टि–वृद्धि के कारण हुए है। उसके दर्शन पाकर पुरूष का उत्साह बढ़ा है और उसके अंग–अंग में स्फूर्ति उत्पन्न हो गई।

नारी प्राणदात्री है। नारी की प्रेरणा पुरूष को महान कलाकार, महान कवि और महान उद्योगी बना सकती है। वह समाज में सरसता का संचार कर सर्जन कार्य को सुचारू रूप से संचालित करती है।

नारी प्राणदात्री है। नारी की प्रेरणा पुरूष को महान कलाकार, महान कवि और महान उद्योगी बना सकती है। वह समाज में सरसता का संचार कर सर्जन कार्य को सुचारू रूप संचालित करती हैं।

1.1 नारी : परिभाषा एवं स्वरूप –

''प्राणी जगत में 'नारी' शब्द 'नर' के समानान्तर है। इसका प्रयोग स्त्रीलिंगवाची 'मादा–प्राणियों के प्रतीक रूप में होता है। किन्तु मानव समाज में 'नारी' शब्द इस सामान्य अर्थ में गृहीत नहीं हैं क्योंकि उसका स्थान नर से कहीं बढ़कर हैं। कोमलता, दृढ़ता, स्पृहा आदि गुण नर की

अपेक्षा नारी में विशेष पाए जाते हैं। यही नहीं रूप–आकार, शरीर संगठन, कार्य व्यापार एवं जीवन यापन की विविध स्थितियों में नारी विधाता की उच्चतम परिकल्पना सिद्ध हुई हैं। पार्वती, गार्गी, सीता, सावित्री, महारानी लक्ष्मी बाई आदि नारियां इन्हीं आदर्शो की प्रमाण हैं।''[1]

वास्तव में गृहस्थाश्रम की सफलता नारी पर आधारित है, इसलिए प्राचीन काल में नारी प्रतिष्ठित पद पर विराजमान थी। मनु ने भी अपने सामाजिक ग्रन्थ मनुस्मृति में लिखा है–

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता

यत्रै तास्तु न पूज्यन्ते सर्वासतत्राफलाः क्रियाः।''[2]

अर्थात् जिस कुल में स्त्रियों की पूजा होती है, उस कुल पर देवता प्रसन्न होते हैं और जिस कुल में इन (स्त्रियों) की पूजा (वस्त्र, भूषण और मधुर वचनादि) द्वारा आदर सत्कार नहीं होता, उस कुल में सब कर्म निष्फल होते हैं।

उपनिषदों में कहा गया है कि ''सृष्टि की सम्पूर्ण रिक्तता की पूर्ति स्त्री से मानी गयी है।''[3]

शतपथ ब्राह्मण के अर्न्तगत जीवन के हर क्षेत्र में नारी और पुरूष की समकक्षता का आख्यान करते हुए कहा गया है कि ''स्त्री और पुरूष दल के दो दलों की भांति हैं।''[4]

रविन्द्र जी ने नारी के व्यक्तित्व का मूल्यांकन बड़े सुन्दर शब्दों में किया है, ''नारी भगवान की अद्भुत कृति नहीं हैं, वरन् मानवों की भी अद्भुत सृष्टि है। मनुश्य निरन्तर अपने अंतरतम् से नारी को सौन्दर्य की विभूति से विभूषित करता है। कविगण स्वर्णिम कल्पना के धागों से उसके लिए जाल सा बुनते रहते हैं। चित्रकार उसके स्वरूप को उसके बाह्य सौन्दर्य को अमरत्व प्रदान करते रहते हैं। मानव ह्रदय की वासना ने सदैव नारी यौवन को ऐश्वर्य प्रदान किया हैं। नारी अर्द्ध नारी और स्वपन।''[5]

हिन्दी साहित्य में कहानी का प्रारंभ बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में हुआ तब तक पश्चिम की कहानी कई मोड़ों से गुजरकर अपनी एक पहचान बना चुकी थी। हिन्दी कहानी के विकास के आरंभ में तिलस्मी व अयारी से परिपूर्ण कहानियां लिखी गई। लेकिन शीघ्र ही 'चन्द्रधर

---

1 डॉ0 सूतदेव हंस, उपन्यासकार चतुरसेन के नारी पात्र, पृ.1

2 मनुस्मृति, मन्वर्थ मुक्तावली, श्लोक – 56, पृ.114

3 अयमाकाश : स्त्रिया पूर्यते, वृहदाख्यकोपनिशद्, पृ.143

4 शतपथ ब्राह्मण, पृ.14, 42, 45

5 रविन्द्र की नारी सम्बन्धी मान्यता का डॉ0 श्री कृष्ण लाल ने अपने 'मीराबाई जीवन–चरित्र और आलोचना' नामक ग्रंथ में उल्लेख किया है। यह वाक्य डॉ0 शैल रस्तोगी, हिन्दी उपन्यासों में नारी, पृ.9 से उद्ध

शर्मा गुलेरी' द्वारा रचित 'उसने कहा था' नामक कहानी प्रकाष में आयी। जो हिन्दी साहित्य में श्रेष्ठ कहानी बनकर साहित्य का कोश–स्तम्भ बन सकी। आगे चलकर प्रसाद और प्रेमचन्द ने तो इसी विधा को साहितियक प्रौढ़ती ही प्रदान नहीं की, अपितु इसके फलक को भी व्यापक और विस्तृत किया। प्रसाद की कहानियों में जहां प्रम और करूणा का, त्याग और बलिदान की, दार्शनिकता और काव्यात्मकता का, भावुकता और चित्रात्मकता का प्राधान्य है, वहीं प्रेमचन्द ने आदर्शोन्मुख–यथार्थवाद को अपनी अधिकतर कहानियों का विषय बनाया। जहां प्रसाद की भावना प्रधान कहानियों की परम्परा में लिखने वाली कहानीकारों की संख्या अत्यंत सीमित है, वहीं प्रेमचन्द के सामाजिक यथार्थ और कथा–विन्यास की आदर्श मानकर लिखने वाले लेखकों की संख्या काफी अधिक हैं जिनमें वृंदावनलाल वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, सियाराम गुप्त, विशम्भरनाथ, सुदर्शन, चतुरसेन आदि प्रमुख है।

प्रेमचंद के पश्चात् उनकी कहानी परम्परा के आगे बढ़ाने के स्थान पर उसे एक नया मोड़ देने वाले लेखक है – जैनेन्द्र। इनमें एक ओर भारतीय दर्शन का आग्रह हे तो दूसरी ओर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से चरित्र–चित्रण की प्रेरणा। यही कारण है कि इनकी कहानियां इस बोझ से दबी पड़ी हैं। सत्य ही कहा गया है कि नये–नये शिल्प में कहानियां लिखने का फैशन, हिन्दी में पहली बार, इन्होनें ही प्रारंभ किया है।

दीक्षा व अन्य कहानियां –

यह कहानी संग्रह सन् 2003 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल सत्रह कहानियां है, जिसमें नारी के कई रूपों का चित्रण किया गया है। इस संग्रह की कहानियां एक खास वर्ग के ताप में तपकर भी समूचे जीवन समाज की प्रतिनिधि है। इनमें उस तबके का संघर्ष, जज्बा, और जीवन यथार्थ को बैचेन करने वाला ताप भी है। मार्मिकता और सहजता का रंग तो इन कहानियों में ताने–बाने के रूप में बुना है।

इस संग्रह की प्रथम कहानी 'पटरी वाले' में मुख्य रूप से पटरी के किनारे छोटी–मोटी दुकान लगाकर सामान बेचने वालों का वर्णन है। इसमें शोषण का विरोध करती एक महिला लक्ष्मी का भी वर्णन है, ''लक्ष्मी उनके सामने पहुंचकर बोली, ''साहब, ये पुलिस वाला है तो हुआ करे। साब, इसने मेरे ऊपर भरे बाजार में हाथ डालने की कोशिश की। साब हम लोग गरीब हैं, अपना पेट पालने के लिए इज्जत से रेहड़ी लगाते हैं। साब, यह हमें बहुत परेशान करता है। हफ्ते–हफ्ते घूस खाता है

और जो सामान उठाता है, उसकी अलग से घूस। अब साब, यह मेरे कपड़ों में हाथ भी डालने लगा है।''[6]

'मन के गुलाम' कहानी पल्लवी नाम की एक लड़की पर केन्द्रित है। पल्लवी का रिश्ता एक अच्छे घर में तय हो जाता है, लेकिन बाद में एक मानसिक बीमारी उसे आ घेरती है। अपने होने वाले पति व सास–ससुर से भरपूर प्यार व सहयोग पाकर वह अपनी बीमारी से पूरी तरह निजात पा लेती है।

'दीक्षा' कहानी नारी पर ही केन्द्रित हैं। घर में बहू आने पर सारा घर खुशियों से भर जाता है। वह घर का सारा खर्च सोच–समझकर चलाती है तथा ससुराल की सारी जिम्मेवारियां निपटा लेती है। उसके सास–ससुर के मरने के बाद सके मन में वैराग्य भावना जागृत हो जाती है। एक गुरू स्वयं उनके घर आकर उसे तथा उसके पति दोनों को दीक्षा प्रदान करते है। अंत में दोनों पति–पत्नी घर छोड़कर उनकी शरण में चले जाते है।

'पोते की चाह' कहानी में एक सास अपनी बहू से पोता चाहती है। इसके लिए वे पंडित के कहने पर काफी धन, धार्मिक कृत्यों पर खर्च कर देती है। लेकिन तीन बार उसे पोतियों का ही मुँह देखना पड़ता है। वह सबके लिए अपनी बहू को ही दोषी मानती है – ''शिव नारायण की मां ने अपनी सारी खिसियाहट बहू पर निकालनी शुरू कर दी। वे उसको सुना–सुनाकर कहती, पता नहीं इतनी अभागी बहू मुझे ही क्यों बदी थी। पता नहीं क्या–क्या जतन किए गए पर एक बेटा नहीं जन पाई। लाखों रूपये पानी की तरह बहा दिए दान–पूजा में, पर लगता है, पापों की गठरी इतनी बड़ी है कि पति का कमाया जब तक पूरा स्वाहा नहीं कर लेगी, इसके कलेजे में ठंडक नहीं पड़ेगी।''[7] लेकिन जब उसके बेटे को डॉक्टर बताते है कि लड़का या लड़की पैदा करना तो पुरूष पर ही निर्भर करता है, तो वह अपनी पत्नी को कभी दोषी नहीं मानता।

'सच्चाई' कहानी में अंजू नामक लड़की के माध्यम से एक ऐसी नारी का वर्णन किया गया है, जो अपने चेहरे पर दोहरेपन का नकाब ओढ़े रहती है। यह लड़की एक भोले–भाले लड़के को फांसकर उससे विवाह करना चाहती है। कुछ समय के बाद ही उस लड़के को अपने दोस्त की मदद से यह ज्ञात हो जाता है कि वह तो एक वेश्या स्त्री है। जो उसे फांसकर उससे विवाह करना चाहती हैं। इस पर वह लड़का उसे घर पर बुलाकर उसे एक थप्पड़ रसीद करता है–

6 सुकुल लोमश, पटरी वाले, दीक्षा और अन्य कहानियां, पृ.15
7 सुकुल लोमेश, पोते की चाह, दीक्षा और अन्य कहानियां, पृ.35

''आलोक ने लपककर पीछे से उसके बाल पकड़ लिए और उसका चेहरा अपनी ओर घुमाकर उस पर एक जोरदार तमाचा रसीद कर दिया जिसकी आवाज उस सूनी गैलरी में गूंज गई। अंजू को चक्कर आया और वह वहीं पर ढ़ेर हो गई।''[8] तथा यहीं कहानी का अंत हो जाता हैं

'वहम' कहानी ऐसी नारी की है जो जीवन भर एक वहम का शिकार रहती है। वह किसी कारणवश अपने पति को धीमा जहर देकर उसे मरवा डालती है। लेकिन उसे लगता है कि उसके घर के नौकर ने उसे ऐसा करते देख लिया है इसलिए वह हर शहर में उसका पीछा कर रहा हैं जबकि नौकर को डर था कि उसकी मालकिन की सच्चाई उसे पता चल गई है। इसलिए वह उसे मरवाने की कोशिश कर रही है। मालिकन का वहम उसका पीछा नहीं छोड़ता तथा अंत में इसी वहम से पीछा छुड़वाने के लिए वह आत्महत्या कर लेती है।

'नया अध्याय' कहानी की नायिका का पति उसे तथा उसके बेटों को छोड़कर दूसरी शादी कर लेता है। इस पर वह अपने पति को कम तथा दूसरी औरत को इसके लिए अधिक दोषी समझती है। अंत में वह अपनी गलती का एहसास होने पर उसका पति उसके पास वापिस लौट आता है।

'वायदा' कहानी में अपनी भाभी की कूटनीति का शिकार एक ननद के रूप में नारी का चित्रण मिलता हैं। यह ननद एक लड़के से प्यार करती है तथा उससे विवाह करना चाहती है। एक दिन वह लड़का जब घर आता है तो भाभी एक कूटनीतिक चाल से उन दोनों को अलग करने में कामयाब हो जाती है, जबकि वह लड़का उस चाल को समझ जाता है, लेकिन चाहकर भी कुछ नहीं कर पाता। काफी समय बाद में वे दोनों जापान में मिल जाते है। तब वे एक–दूसर को बताते है कि वर्षो पुराना वायदा पूरा करने के लिए उन दोनों ने अब तक विवाह नहीं किया। अंत में वे दोनों मिल जाते है। यहीं कहानी का सुखद अंत हो जाता है।

'सास–बहू' कहानी मुख्य रूप से नारी पर ही केन्द्रित हैं। ननकी शादी करके ससुराल में आती है तो वह अपनी सास को रूपये चुराते हुए देख लेती है। वह अपने पति के इस विषय में बात करती है तथा उसका पति अपनी माँ को अच्छी खासी फटकार लगाता है। सास, बहू को उस समय कुछ नहीं कहती पर उसके मन में यह गांठ घर कर जाती है। कुछ समय पश्चात् बहू एक बेटे को जन्म देती है। वह जब दूसरे घरों में काम करने जाती तो अपने बेटे को अपनी सास के पास ही छोड़

[8] सुकुल लोमेश, पोते की चाह, दीक्षा और अन्य कहानियां, पृ.49

जाती। उसकी सास अपने पोते को चोरी करना सिखाकर अपने अपमान का बदला लेती है। जब उसकी बहू को यह बात पता चलता है तो वह अपनी सास से अपनी भूल पूछती है। सास को अपनी गलती का एहसास होता है तो वह अपने पोते को सुधारने की जिम्मेदारी स्वयं ही उठाती है।

'अपना मकान' कहानी एक ऐसी नारी पर केन्द्रित है जो अपना गांव चादर से ज्यादा फैला लेती है। इसमें एक औरत का मकान बनाने का सपना एक जुनून बन जाता है तथा वह उसे पूरा करने के लिए अपना सारा धन, जेवर आदि खर्च कर देती है। अंत में उसे अपनी गलती का एहसास होता है, लेकिन उसका जीवन रूपी पंछी तब तक उसका साथ छोड़ जाता है।

'अभियान' कहानी गौरी नामक एक लड़की पर आधारित है, जिसे भगवान ने इतनी अधिक सुन्दरता दी थी कि देखने वाले भी चौंधिया जाते। इसलिए अपनी सुंदरता को लेकर उसके मन में काफी अभिमान भी घर आया था। जिसका वर्णन लेखक ने इन शब्दों द्वारा किया है – ''मोहल्ले के लड़के उसके लिए जान देने को तैयार थे, पर कभी किसी लड़के उसके लिए जान देने को तैयार थे, पर कभी किसी लड़के ने न उस पर कोई फिकरा कसा था और न ही उसे छेड़ा था। वे उसकी खूबसूरती से इतना प्रभावित थे कि उससे घबराते थे। जब वह सड़क पर निकलती तो मानों अपने पति का एक दोस्त उसकी सुंदरता पर व्यंग्य कस देता है तो वह उसे सहन नहीं कर पाती तथा अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है। उसके पति को जब यह बात पता चलती है तो उसे लगता है कि वह अपने प्रेम से ही गौरी को ठीक कर लेगा।

महाबीर सिंह 'महावीर का जन्म 1 मार्च 1960 को मकड़ाना ग्राम के भिवानी जिले में हुआ जो कि हरियाणा प्रदेश में हैं। ये पूर्व वरिष्ठ–नौसैनिक रह चुके है तथा इन्होनें स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य भी किया।

'सरहद की आवाज' तथा 'मन की आंखे खोल' इनकी प्रकाशित कृतियां है। प्रकाशित कृतियों की अपेक्षा इनकी अप्रकाशित कृतियों की संख्या अधिक है, जिनमें बाल कहानियां, हिन्दी भक्ति गीत, हिन्दी गीत, नशामुक्ति भजन, हरियाणवीं भजन और भजनोभरी शहीद की कथा आदि उल्लेनीय है।

इनका कहानी संग्रह 'लाड़ो' 2004 में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल पांच कहानियां है। इसमें इन्होनें नारी के संघर्षशील जीवन को चित्रित किया है। इन्होनें उन नारी चरित्रों को भी प्रमुखता

से उभारा है, जिन्होनें वक्त आने पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर अपना रास्ता स्वयं चुना तथा नारी के अबला होने की छवि और मिथ को भी तोड़ा है।

संग्रह की प्रथम कहानी 'दुल्हन की समाधि' में इन्होनें बेटी रूप में एक संघर्षशील व बहादुर लड़की बुल्ली की शौर्य–गाथा को अंकित किया है। बड़े बेटे के घर से नाता तोड़ लेने के बाद घर की बेटी बुल्ली घर का सारा कार्य भार अपने ऊपर ले लेती हैं अपने छोटे भाई को पढ़ाने के लिए वह मजदूरी भी करती है। जिसका वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है – भविष्य का ध्यान रखते हुए बुल्ली ने अपने को ही बुल्ली का जीवन संघर्ष में बीतता है। अपनी शादी के दिन वह गांव के कुछ गुंड़ों से भिड़ जाती है तथा सारे गांव की लड़कियों की इज्जत की रक्षा करती हुई अंत में वीरगति को प्राप्त होती है, ''बुल्ली रणचंडी बन गई। वह सिंहनी की तरह कुल्हाड़ी लिए उन गुण्ड़ों पर झपड़ पड़ी। उन्होनें भी लड़कियों को छोड़ा और बुल्ली की ललकार सुन बुल्ली की तरफ दौड़े।''[9]

'लाडो' कहानी एक पतिपरायण नारी भतेरी की है जो वक्त पड़ने पर पूरे समाज से अकेली ही भिड़ जाती हैं। वह अपनी पूरी जिंदगी अपने पति की बात मानती है तथा घर की भरी पूरी जिम्मेदारी संभालती है। अपनी ननद व देवरानी से स्नेह से पेश आती है। लेकिन उस स्त्री के विधवा होने पर धोखे से उसका देवर व देवरानी उससे धन ऐंठने की कोशिश करते है – ''कुछ भी करो भाभी, मोहित को तो छुड़वाना ही है। अरे तुम्हारे जेवर किस काम आएंगे?'' जय सिंह ने अचानक जेवरों की तरफ भतेरी का ध्यान दिया।

वह एक और चिट्ठी लिख, आंख बचाकर फेंक देता है, जिसमें लिखा होता है कि कल तक पैसे मिल जाने चाहिए और यदि पैसे पूरे नहीं तो जेवर भी दे सकती हो।''[10]

कहानी का अंत तक उपदेशात्मक सत्य के साथ होता है कि एक परमवीर सिपाही के अपने देश पर जान कुर्बान कर देने पर भी देश वाले उसकी पत्नी के साथ ऐसे धोखे करते है। यहां लाड़ो शब्द भतेरी के लिए प्रयुक्त है।

'संजोग' कहानी में कहानीकार के दो नारियों के संजोग को दर्शाया है, जिसमें एक नारी पतिव्रता है जो अपने पति द्वारा जलाए जाने के पश्चात् भी पुलिस को उसका नाम नहीं बताती, ''मैं सच ही बोलूंगी – खो मैनें अपनी जिन्दगी को स्वयं ही खत्म कर डाला। मैनें आत्मदाह कर डाला और उसका जिम्मेदार मैं खुद हूं। यदि इस हादसे में मेरी मृत्यु हो जाती है। तो मेरे किसी भी संबंधी

9 महावीर सिंह 'महावीर' दुल्हन की समाधि, लाडो (संग्रह), पृ.22
10 महावीर सिंह 'महावीर' दुल्हन की समाधि, लाडो (संग्रह), पृ.22

को तंग न किया जाए।''[11] जबकि दूसरी तरह वह नारी है जो वफादार पत्नी तो क्या एक सौतेली माँ भी सही ढ़ंग से नहीं बन पाती। यहां तक कि वह अपनी सौत की बेटी सीता को भी बेचने का प्रयास करती है, ''सामने शकुंतला एक पराये मर्द की आगोश में थी। सीता ने पहचान लिया उस अजनबी को। यह वही विकराल भयावह आदमी थी जिसे कुछ दिन पहले सीता ने घर में देखा था।''[12]

'किस्मत का लेख' पारिवारिक सम्बन्धों पर केंद्रित है, जिसमें रोहताश अपनी पत्नी के रहते हुए अपनी साली रचना से सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। पत्नी की मृत्यु के पश्चात् की शादी उसकी साली से होती है, तब उनकी आयु में अत्याधिक अन्तर के कारण वह उसे संतुष्ट नहीं कर पाता तथा परिणामस्वरूप रचना अपने पड़ोसी से सम्बन्ध स्थापित कर लेती हैं लेकिन जब वह पड़ोसी रचना की बेटी के साथ दुर्व्यवहार करता है तो वह उसका कत्ल कर स्वयं भी जेल में आत्महत्या कर लेती है।

'आग' कहानी–संग्रह की लेखिका पैमिली मानसी का जन्म 11 फरवरी 1946 को सियालकोट में हुआ। इन्होनें एम.ए. दर्शनषास्त्र व अंग्रेजी साहित्य से किया। ये एस.पी. मुखर्जी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में रीडर है। इनकी ये कहानियां, लेख, कविताएं व अनुवाद विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

पैमिला मानसी का कहानी संग्रह 'आग' 15 कहानियों के साथ सन् 1997 में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत कहानी संग्रह में नारी की मनःस्थिति का चित्रण अधिकतम किया गया हैं। यह कहानियां मनुष्य पर मनुष्य द्वारा ही किए गए अन्याय व अत्याचार की कहानियां होते हुए भी, उसके भीतर की अच्छाई पर प्रकाश डालती है।

'रिश्तों की करवट' कहानी में मां के रूप में बीनू नाम महिला पात्र की मनःस्थिति का चित्रण किया गया है। इसमें बताया गया है कि तीसरे पात्र रवि अंकल के आने से उनकी जिन्दगी की दिशा ही बदल जाती हैं। अंत में बीनू रवि अंकल के पास जाकर रहने का फैसला कर लेती है। इसमें उसका बेटा भी उसका पूरा सहयोग देता है, ''मैनें कब कहा मैं तुम से अलग हूं माँ। मगर तुम अंकल के साथ जाओ। तुम्हारी जगह वहीं है। तुम्हारा घर भी शायद वहीं है।''[13] इस प्रकार सभी रिश्ते एक नई करवट लेते हैं।

---

11 वही, संजोग, वहीं, पृ.84

12 वही, पृ.95

13 पैमिली मानसी, रिश्तों की करवट, आग (कहानी–संग्रह), पृ.33

'आग' कहानी नीरजा नाम की महिला पर केन्द्रित है। इस कहानी में मुख्य रूप से पति–पत्नी के सम्बन्धों को उजागर किया गया है। नीरजा अपने पति की बेवफायी बर्दाश्त नहीं कर पाती जिसके चलते उसके जीवन में एक पुरूष प्रवेश कर जाता है। बिल्डिंग में एक हादसे में आग लगने पर वह व्यक्ति नीरजा को न बचाकर अपनी पत्नी व बच्चों को आग से बचाता है, ''बिल्डिंग में आग लगने के बाद वह नीरजा से मिल ही नहीं पाया था। उस दिन के अपने व्यवहार, लापरवाही के लिए के लिए क्षमा भी नहीं मांग पाया था।''[14] इस हादसे से नीरजा के कोमल मन को गहरा सदमा लगता है तथा अंत में वह आत्महत्या कर लेती है।

'सहारे' कहानी में पैमिला मानसी ने मां और बेटी के सम्बन्धों को दर्शाया है। मां और पिता के बीच अलगाव होने के कारण मां दूसरी शादी कर लेती है, लेकिन बेटी टीना उस नए पिता को स्वीकार नहीं कर पाती और अपनी मां से अलग रहने का निश्चय कर लेती है। परिस्थितियां ऐसी बन जाती है कि उसकी मां और स्वयं उसे दोनों को एक सहारे की जरूरत है और वह सहारा है उन दोनों का सम्बन्ध। अंततः मां और बेटी के बीच की दूरी सिमट जाती है और वह एक साथ रहने लगती है।

'एहसास' कहानी में दर्शाया गया है कि किस प्रकार दम्पति स्वयं दुःख में रहकर भी अपने बच्चों को अच्छा जीवन देते है। माता–पिता का अपने बच्चों के प्रति यही एहसास कहानी में चित्रित है।

'अपना–अपना सलीब' कहानी में नारी का बहन रूप में चित्रण किया गया है। इसमें दर्शाया गया है कि बहन भाई के रिश्ते में कितना प्रेम व आत्मीयता होती हैं। एक बहन अपने भाई की बीमारी के विषय में सुनकर उससे मिलना चाहती है लेकिन भाई अपनी बहन से अत्याधिक प्रेम करता है तथा वह नहीं चाहता है कि उसकी बहन उसकी बीमार हालत देखकर परेशान हो इसलिए वह उससे नहीं मिलता।

'तो ठीक है। मुझे पता बताओ, मैं आती हूं। भाई एकदम हत्थे से उखड़ गया। 'तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? क्या देखने आनी चाहती हो? मेरी हालत? क्यों देखना चाहती हो? बोलो? क्या करोगी देखकर? क्या कर सकती हो तुम? भाई खांसने लगा।''[15]

[14] पैमिली मानसी, आग, आग, पृ.44
[15] पैमिला मानसी, अपना–अपना सलीब, आग, पृ.153

'दुर्घटना' कहानी में नारी की मार्मिक दषा का अंकन लेखिका ने किया है। इस कहानी की नायिका अपने बॉस से प्यार कर बैठती है तथा उसके बुलाने पर वह उससे मिलने के लिए एक होटल में चली जाती है। लौटते वक्त कुछ गुंडे उससे बलात्कार कर उसे मार देते है। लेकिन उसके बॉस को इस घटना से कोई फर्क नहीं पड़ता। यह उसके लिए एक दुर्घटना बनकर रह जाती है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि समकालीन कहानीकारों ने नारी के सभी रूपों का अनुशीलन अपनी कहानियों में किया हैं। इनकी नारी माता रूप में ममता की मूर्ति, पत्नी रूप में सच्ची पतिव्रता स्त्री, बेटी रूप में कर्तव्यनिष्ठा बहन के रूप में कर्तव्यपरायण व प्रेमिका रूप में सच्ची प्रेमिका नजर आती है।

इन्होनें नारी से सम्बन्धित लगभग सभी समस्याओं को अपनी कहानियों में उठाया। इन्होनें नारी की दहेज, तलाक, अनपढ़ता, बेरोजगारी, नारी का अधिक पढ़ा–लिखा होना, नारी स्वच्छंदता आदि समस्याओं के साथ–साथ नारी के एकाकी जीवन की समस्या को भी चित्रित किया तथा घर से दूर रहकर नौकरी करने वाली नारी की समस्याओं का चित्रांकण भी किया।